



ॐ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

आरव शर्मा की रत्न और रुद्राक्ष रिपोर्ट

नमूना रिपोर्ट • काल्पनिक व्यक्ति

Aarav Sharma

15 अगस्त 1991 • 06:40

Jaipur, Rajasthan, India



IASTROGURU

उन्नत iAstroGuru इंजन से गणना
बहु-स्तरीय गुणवत्ता जाँच

लग्न: उगती राशि। दशा: ग्रहों से जुड़ी समय की अवधि। नक्षत्र: चंद्रमा के पथ का एक भाग।

इस रिपोर्ट में

01 आपके रत्नों का तर्क

05 बचने वाले रत्न

02 आपका जीवन रत्न

06 पहनना, परखना और देखभाल

03 आपका भाग्यवर्धक रत्न

07 रुद्राक्ष और मंत्र

04 आपका भाग्य रत्न

08 यह रिपोर्ट कैसे बनी

01 आपके रत्नों का तर्क

आरव, ज्योतिष में रत्न उन ग्रहों के लिए चुने जाते हैं जो आपकी कुंडली की मदद करते हैं, केवल जन्म के महीने से नहीं। शास्त्रीय पद्धति आपके लग्न से शुरू होती है और तीन भावों के स्वामियों को देखती है: पहला, पाँचवाँ और नौवाँ।

तीन भाव, तीन रत्न

आपका लग्न सिंह है। पहले भाव के स्वामी से आपका जीवन रत्न आता है, जो स्वयं और जीवन-शक्ति का रत्न है। पाँचवें भाव के स्वामी से, जो बुद्धि, संतान और पुण्य का भाव है, आपका भाग्यवर्धक रत्न आता है। नौवें भाव के स्वामी से, जो भाग्य, गुरुओं और धर्म का भाव है, आपका भाग्य रत्न आता है। पहला, पाँचवाँ और नौवाँ त्रिकोण भाव हैं, कुंडली के सबसे शुभ भाव, इसलिए इनके स्वामी वे ग्रह हैं जिन्हें रत्न सुरक्षित रूप से बल दे सकता है।

सिंह लग्न के लिए ये स्वामी हैं पहले भाव के सूर्य, पाँचवें भाव के गुरु और नौवें भाव के मंगल। इनके रत्न हैं माणिक्य, पुखराज और मूंगा।

♦ जीवन रत्न: माणिक्य (सूर्य) । भाग्यवर्धक रत्न: पुखराज (गुरु) । भाग्य रत्न: मूंगा (मंगल) ।

रत्न क्या है, और क्या नहीं

परंपरा मानती है कि रत्न अपने ग्रह को बढ़ाता है। इसीलिए रत्न केवल उस ग्रह के लिए चुना जाता है जो आपके पक्ष में काम करता है, और अनचाहे ग्रह का रत्न टाला जाता है। रत्न एक पारंपरिक अभ्यास है, इलाज नहीं, और इस रिपोर्ट में कुछ भी नुस्खा नहीं है। कोई भी रत्न पहनने से पहले किसी भरोसेमंद ज्योतिषी से पूरी कुंडली दिखाएँ, और दबाव में कभी न खरीदें।

02 आपका जीवन रत्न

माणिक्य आपके लग्नेश सूर्य का रत्न है।

आपकी कुंडली में सूर्य

आपके सूर्य कर्क में 27°59' पर, आपके बारहवें भाव में, आश्लेषा चरण 4 में, मित्र की राशि में बैठे हैं। सूर्य केवल आपके पहले भाव के स्वामी हैं, इसलिए रत्न के लिए यह पूरी तरह साफ़ चुनाव है: इनके साथ कोई कठिन भाव नहीं जुड़ता।

लग्नेश बारहवें भाव में हों तो आपकी जीवन-शक्ति एकांत में, विश्राम, नींद और सुखियों से दूर समय में लौटती है। परंपरा में जब लग्नेश किसी छिपे भाव में हो, जैसे आपके हैं, तब आत्मविश्वास, उपस्थिति और स्वयं के बोध को बल देने के लिए माणिक्य पहना जाता है।

रोज के जीवन में बलवान सूर्य परंपरा में आपके लग्न के विषयों से जुड़े हैं: सेहत और सहनशक्ति, आपका स्वभाव, अधिकार वाले लोगों से पहचान और नेतृत्व का आत्मविश्वास। क्योंकि सूर्य आपके लग्न के स्वामी हैं, इसलिए आपके लिए यही रत्न सबसे पहले सुझाया जाता है।

♦ माणिक्य आपका सबसे साफ़ रत्न है: सूर्य केवल आपके पहले भाव के स्वामी हैं।

इसे परंपरा से कैसे पहनते हैं

माणिक्य सोने या ताँबे में जड़ा जाता है और दाहिने हाथ की अनामिका में पहना जाता है, पहली बार रविवार सुबह सूर्य मंत्र ॐ सूर्याय नमः के पाठ के बाद। असली माणिक्य न मिल सके तो लाल तामड़ा या लाल स्पिनेल पारंपरिक उपरत्न है।

03 आपका भाग्यवर्धक रत्न

पुखराज आपके पाँचवें भाव के स्वामी गुरु का रत्न है।

आपकी कुंडली में गुरु

आपके गुरु सिंह में 0°08' पर, आपके पहले भाव में, मघा चरण 1 में, मित्र की राशि में बैठे हैं। गुरु बुद्धि, संतान और पुण्य के आपके पाँचवें भाव के स्वामी हैं, और परिवर्तन व शोध के आपके आठवें भाव के भी। आठवाँ भाव कठिन भावों में से एक है, इसलिए परंपरा पुखराज पहनने से पहले पूरी कुंडली दिखाने को कहती है।

आपके गुरु अस्त भी हैं, यानी सूर्य के पास, जो परंपरा में ग्रह की बाहरी बात रखने की कला को कमजोर करता है। ठीक ऐसी स्थिति में किसी मददगार ग्रह को बल देने के लिए रत्न का प्रयोग होता है, इसलिए आपकी जैसी कुंडली के लिए ज्योतिषी की पुष्टि के बाद पुखराज अक्सर सुझाया जाता है।

समय भी मायने रखता है। आप 26 अगस्त 2027 तक गुरु महादशा में हैं, उसी ग्रह के काल में जिसका यह रत्न है। परंपरा किसी ग्रह की दशा को उसे बल देने का स्वाभाविक समय मानती है, इसलिए यदि ज्योतिषी पुष्टि करें, तो पुखराज अक्सर इन्हीं वर्षों में पहना जाता है।

इसे परंपरा से कैसे पहनते हैं

पुखराज सोने में जड़ा जाता है और तर्जनी में पहना जाता है, पहली बार गुरुवार सुबह मंत्र ॐ बृहस्पतये नमः के साथ। सुनहला या पीला टोपाज़ पारंपरिक सस्ता उपरत्न है।

04 आपका भाग्य रत्न

मूंगा आपके नौवें भाव के स्वामी मंगल का रत्न है।

आपकी कुंडली में मंगल

आपके मंगल सिंह में 25°16' पर, आपके पहले भाव में, पूर्वा फाल्गुनी चरण 4 में, मित्र की राशि में बैठे हैं। सिंह लग्न के लिए मंगल भाग्य के नौवें भाव और घर व भीतरी शांति के चौथे भाव, एक केंद्र, दोनों के स्वामी हैं। जो ग्रह केंद्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी हो, उसे योगकारक कहते हैं, कुंडली का सबसे मददगार ग्रह।

इसलिए मूंगा आपके लग्न के लिए परंपरा में सबसे पसंदीदा रत्नों में से एक है। मंगल पहल और साहस देते हैं; उन्हें बल देना परंपरा में उस भाग्य से जुड़ा है जो कर्म के पीछे चलता है।

आपके लग्न में बैठे मंगल घर, संपत्ति और भीतरी शांति के चौथे भाव के भी स्वामी हैं, इसलिए परंपरा मूंगे को काम में साहस और घर में स्थिरता, दोनों से एक साथ जोड़ती है। इसे अक्सर जीवन रत्न के बदले नहीं, उसके साथ पहना जाता है।

♦ मूंगा आपके योगकारक मंगल को बल देता है, जो चौथे और नौवें दोनों भावों के स्वामी हैं।

इसे परंपरा से कैसे पहनते हैं

मूंगा सोने या ताँबे में जड़ा जाता है और अनामिका में पहना जाता है, पहली बार मंगलवार सुबह मंत्र ॐ भौमाय नमः के साथ। लाल अकीक पारंपरिक उपरत्न है। परंपरा में माणिक्य और मूंगा एक ही उँगली में बिना टकराव के साथ पहने जाते हैं, क्योंकि सूर्य और मंगल मित्र हैं।

05 बचने वाले रत्न

जो ग्रह आपकी कुंडली के विरुद्ध काम करे, उसका रत्न परंपरा में अलग रखा जाता है, चाहे वह कितना भी सुंदर हो।

मोती

सिंह लग्न के लिए चंद्रमा केवल बारहवें भाव के स्वामी हैं, जो हानि और खर्च का भाव है। इसलिए परंपरा आपके लिए मोती नहीं सुझाती, भले ही तुला में बैठा आपका चंद्रमा कोमल और मिलनसार है। आपके चंद्रमा को रत्न से अधिक विश्राम, सामंजस्य और अच्छे साथ से सहारा मिलता है।

बात चंद्रमा के कमजोर होने की नहीं है; बात यह है कि आपके लग्न के लिए चंद्रमा किस भाव के स्वामी हैं। रत्न अपने ग्रह के हर भाव को बल देता है, और आपके लिए चंद्रमा का एकमात्र भाव बारहवाँ है, इसलिए मोती उन चीजों को नहीं, खर्च और अलगाव को बढ़ाएगा।

राहु और केतु के रत्न, गोमेद और लहसुनिया, भी केवल सावधानी से परखने के बाद पहने जाते हैं, क्योंकि ये दोनों ओर तेज़ असर वाले माने जाते हैं।

♦ मोती अलग रखें: सिंह लग्न के लिए चंद्रमा केवल बारहवें भाव के स्वामी हैं।

06 पहनना, परखना और देखभाल

वुनना और परखना

परंपरा बिना दरार वाला प्राकृतिक, बिना उपचार का रत्न माँगती है। वजन अक्सर रत्ती में बताया जाता है; इसे केवल पारंपरिक संकेत मानें, और आकार की सलाह किसी भरोसेमंद ज्योतिषी से लें। नया रत्न पहले कुछ दिन पहनकर देखना भी प्रथा है कि आप कैसा महसूस करते हैं; यदि कुछ ठीक न लगे, तो उसे उतार दें।

पहली बार पहनने से पहले रत्न को परंपरा से कच्चे दूध या गंगाजल से धोया जाता है और उसके अपने दिन उसके मंत्र से सिद्ध किया जाता है। इन्हें हल्के हाथ से साफ़ करें और भारी शारीरिक काम के समय उतार दें।

पहले कौन-सा रत्न

यदि आप केवल एक रत्न पहनना चाहें, तो परंपरा आम तौर पर जीवन रत्न माणिक्य से शुरू करती है, क्योंकि यह स्वयं लग्न को सहारा देता है और सूर्य के साथ कोई कठिन भाव नहीं जुड़ता। आपके योगकारक का मूंगा स्वाभाविक दूसरा है। पुखराज, जिसके स्वामी आपके आठवें भाव के भी स्वामी हैं, वह रत्न है जिसे ज्योतिषी के पूरी कुंडली देखने के बाद ही लें, भले ही गुरु की दशा इसे अभी समयोचित बनाती है।

जो हम कभी नहीं करेंगे

हम रत्न नहीं बेचते, और इस रिपोर्ट में कुछ भी आपको रत्न खरीदवाने के लिए नहीं लिखा गया। बहुत-से लोग इसके बदले अगले अध्याय के रुद्राक्ष और मंत्र चुनते हैं, और परंपरा उन्हें अपने आप में पूरे अभ्यास मानती है।

07 रुद्राक्ष और मंत्र

हर ग्रह का एक रुद्राक्ष और एक बीज मंत्र भी है: रत्न के साथ या उसके बदले सरल, सस्ते विकल्प।

आपके तीन ग्रह

आपके लग्नेश सूर्य के लिए पारंपरिक रुद्राक्ष एक मुखी है, और मंत्र ॐ सूर्याय नमः है, जिसका पाठ रविवार को सूर्योदय के समय सबसे अच्छा है।

आपके पंचमेश गुरु के लिए रुद्राक्ष पाँच मुखी है, जो सबसे अधिक पहना जाता है, और मंत्र गुरुवार को ॐ बृहस्पतये नमः है।

आपके योगकारक मंगल के लिए रुद्राक्ष तीन मुखी है, और मंत्र मंगलवार को ॐ भौमाय नमः है। परंपरा में बिना ध्यान के पहने महँगे रत्न से अधिक इनमें से किसी एक का सरल, नियमित अभ्यास मूल्यवान माना जाता है।

एक सरल दैनिक अभ्यास

परंपरा मात्रा से अधिक नियम से काम करने की आदत को महत्व देती है: हर सुबह रुद्राक्ष की माला पर किसी एक मंत्र की ग्यारह या इक्कीस आवृत्तियाँ अपने आप में पूरा अभ्यास है। आपके लग्न के लिए सूर्योदय पर सूर्य मंत्र से शुरुआत उस विश्राम के साथ स्वाभाविक रूप से मेल खाती है जिसकी आपकी कुंडली को ज़रूरत है, क्योंकि आपके लग्नेश नींद और नवीनीकरण के बारहवें भाव में हैं।

08 यह रिपोर्ट कैसे बनी

आपके रत्न iAstroGuru Engine ने शास्त्रीय लग्न पद्धति से निकाले हैं, लाहिड़ी अयनांश और संपूर्ण राशि भाव के साथ। पाठ इन्हीं गणना किए गए तथ्यों से लिखा गया और जारी करने से पहले कुंडली से अपने आप मिलाकर जाँचा गया। रत्न एक पारंपरिक अभ्यास हैं, कोई चिकित्सीय, पैसे संबंधी या अन्य पेशेवर सलाह नहीं। यह नमूना एक काल्पनिक व्यक्ति, आरव शर्मा, के लिए तैयार किया गया है।

उन्नत iAstroGuru इंजन से गणना, भरोसेमंद संदर्भों से सटीकता के लिए परखी गई। इन गणनाओं से स्वचालित व्याख्या, हर रिपोर्ट हमारी बहु-स्तरीय गुणवत्ता जाँच से परखी गई।



Shiv Shakti Software Solutions (iAstroGuru)

Digitally signed on 9 Oct 2026, 14:34 IST

Document ID IAG-CZ03-RFRT-0719